भारतीय समाज की वर्णवादी व जातिवादी जड़ता, अंधविश्वास, पाखंड, मूर्तिपूजा, चमत्कार, अज्ञानता और दरिद्रता को समाप्त करने में अनेक महापुरुषों ने भूमिका निभाई। इसमें सबसे पहले शुरूआत तथागत बुद्ध ने की। वही कार्य सतगुरु रविदास जी, सतगुरु कबीर जी और बाबा साहब डा. भीम राव अंबेडकर जी ने आगे बढ़ाया। समाज जिस वर्णवादी, जातिवादी, कर्मकांडी, गरीबी और स्वर्ग-नरक की मन-गढ़ंत षड्यंत्रकारी व्यवस्था में फंसा हुआ था, उससे बाहर निकालने के लिए इन महापुरुषों ने बताया कि कोई तथाकथित भगवान नहीं आने वाला जो आपको इस षड्यंत्रकारी व्यवस्था से बाहर निकाल सके। उन्होंने 'अत्त दीपो भव' के सिद्धान्त को ही कल्याणकरी बताया।

जन्म:- सतगुरु रविदास जी का जन्म माघ पूर्णिमा, विक्रम संवत 1433(सन 1376 ई) में सीर गोवर्धनपुर (वाराणसी, उत्तर प्रदेश) में हुआ। उनके पिता का नाम राघव व माता का नाम करमा देवी था। उनकी पत्नी का नाम लोना देवी था। उनका एक पुत्र भी था जिनका नाम विजयदास था। विक्रम संवत 1584 (सन 1527 ई.) को चित्तौड़गढ़ राजस्थान में उनका महापरिनिर्वाण हुआ। उन्होंने लम्बी उम्र पाई थी।

स्वतन्त्रता, समानता और भाईचारा:- सतगुरु रविदास जी स्वतन्त्रता, समानता और भाईचारे का समाज चाहते थे। उन्होंने पराधीनता (गुलामी) को सबसे बड़ी दीनता और कलंक बताया है। उन्होंने पराधीनता को पाप बताते हुए कहा कि पराधीन व्यक्ति को सब ही दीन-हीन समझते हैं तथा ऐसे व्यक्ति का कोई भी सम्मान नहीं करता। किसी भी प्रकार की पराधीनता चाहे वो शारीरिक हो, मानसिक हो, धार्मिक हो, सामाजिक हो, सांस्कृतिक हो, आर्थिक हो और राजनीतिक हो, इससे मुक्त होने का प्रयास करना चाहिए:-

पराधीनता पाप है, जान लेहु रे मीत।
रविदास दास पराधीन सौं, कौन करै है प्रीत।।
पराधीन को दीन क्या, पराधीन बेदीन।
रविदास दास पराधीन को, सबहिं समझे हीन।।

सतगुरु रविदास जी ने प्रत्येक व्यक्ति के लिए खाद्य सुरक्षा और समानता की बात की। वह ऐसा देश, समाज और राज चाहते थे जिसमें कोई भी भूखा ना हो। कोई भी गरीब ना हो। कोई भी पीड़ित ना हो। सभी समान हो। कोई ऊंचा-नीचा ना हो। किसी भी प्रकार का भेदभाव ना हो सभी खुश रहें। वह सभी को हर प्रकार के कष्टों से मुक्ति दिलाना चाहते थे। सतगुरु रविदास जी ने सभी की खुशी की बात भारतीय इतिहास में सबसे पहले उठाई :-

ऐसा चाहूँ राज मैं, जहाँ मिलै सबन को अन्न ।
छोट बड़ो सब सम बसै, रविदास रहे प्रसन्न।।
मैं रूखी सूखी खाऊं, औरण की भूख मिटाऊं।
कोई परे ना दुख कि पासा, सब सुखी बसे रैदासा।।

कल्याण के लिए कार्य:- गुरु रविदास जी अपने लिये कुछ नही मांगते। किसी के भी सामने हाथ नहीं फैलाते। लेकिन, जब समाज के किए किसी भी कार्य की बात हो, किसी की भलाई की बात हो तो उन्हें कोई शर्म की बात नहीं लगती। वह कहते है :-

मर जाऊं मांगू नहीं अपने हित के काज।
परमारथ के कारण मोहे न आवे लाज।।

जाति एक षड्यंत्रकारी व्यवस्था:- सतगुरु रविदास जी जाति व्यवस्था को षड्यंत्रकारी दिमाग की उत्पत्ति मानते थे। वो जाति के घोर विरोधी थे। षड्यंत्रकारी दिमाग की बनाई इस जाति के कारण ही मानवता समाप्त हो रही है। इस जाति से भेदभाव, छूआछूत, गैरबराबरी व शोषणकारी व्यवस्था का निर्माण हुआ है। लोग जाति-पाति में ही उलझे हुए हैं। जाति को नष्ट करने पर ही इस रोग से छुटकारा मिलेगा। सतगुरु बताते हैं:-

जात-पात के फेर में, उलझ रहे सब लोग।
मनुष्यता को खा रहा है, रैदास जात का रोग।।

जब संसार में सभी लोग एक ही तरह से पैदा होते है तो उंच-नीच और सवर्ण-अवर्ण की बात करने वाले मूर्ख हैं-

रैदास एक बूँद से,भयो सब विस्तार।
मूर्ख है जो करे वर्ण-अवर्ण विचार।।

सतगुरु रविदास जी जातियों की तुलना केले के कमजोर तने से करते है जो केवल पत्तियों से बना होता है। जैसे केले के तने से एक पत्ता हटाने पर दूसरा पत्ता निकल आता है। क्रमश: दूसरा हटाने पर तीसरा, तीसरा हटाने पर चौथा, चौथे के बाद पाँचवाँ और ऐसे करते-करते पूरा पेड़ ही खत्म हो जाता है। उसी प्रकार इंसान जातियों में बंटकर केले के पेड़ की तरह खत्म हो जाता है। इसी कारण समाज कभी जुड़ नहीं पाया। इस पर सतगुरु रविदास जी कहते हैं:-

जात जात में जात है, ज्यों केलन की पात।
रविदास न मानुष जुड़ सकै, जौ लौ जात न जात।।

सतगुरु रविदास जी ने बताया कि जातिवादी षड्यंत्र, कर्मकांड, आडंबर, मूर्तिपूजा, चमत्कार और मोक्ष की अवधारणा में शोषित समाज फंसा हुआ है। पुरोहित के माथे के तिलक, हाथ की माला, जप और बाह्य दिखावा आदि सब लोगों को ठगने का स्वांग है। उन्होंने तीर्थ यात्राओं को ढोंग बताया है। सबके पास बुद्धि है जो इसका प्रयोग करेगा उसकी ही उन्नति और विकास होगा:-

माथै तिलक हाथ जप माला,जग ठगने कूँ स्वांग बनाया।
का मथुरा का द्वारिका, का काशी हरिद्वार।
रविदास खोज बुद्धि आपनो, तहा मिला विचार।।

उनके विषय में प्रचलित मनगढ़ंत बातें और चमत्कार :- सबसे पहली मनगढ़ंत बात और चमत्कार तो उनके जन्म के साथ ही जोड़ा गया है कि पिछले जन्म में गुरु रविदास जी ब्राह्मण थे। कथा के अनुसार एक बार उन्होंने मांस खा लिया था। अत: रामानंद ने उन्हें श्राप दे दिया कि वह चमार के घर पैदा हो जाए। वह इस जन्म में चमार के घर पैदा हो गए। आगे कथा यह है कि चमार के घर पैदा होने पर भी उन्हें अपने पिछले जन्म में ब्राह्मण होना याद रहा। अत: जन्म लेने के बाद उन्होंने अपनी चमार मां का दूध नहीं पिया।

ऐसा कहीं, कोई प्रावधान नहीं है कि ब्राह्मण मांस खाकर चमार के घर पुनर्जन्म लेगा। अत: यह कहानी एकदम मनगढ़ंत है। हमें ऐसे लोगों से सावधान रहना चाहिए तथा जहां भी ऐसी कथाएँ की जाती हों उनका डटकर विरोध करना चाहिए।

दूसरा किस्सा यह है कि रविदास आम पुरोहितों की तरह पूजा पाठ करने लग गए तो पुरोहितों ने कहा कि रविदास जी अछूत हैं इसलिए वे पूजा पाठ नहीं कर सकते हैं। तब गुरु रविदास जी ने स्वयं को पुरोहित सिद्ध करने के लिए अपनी छाती चीर कर उसमें छिपे सात रंग के जनेऊ दिखाए। यह किस्सा भी एकदम झूठा और मनगढ़ंत है। किसी भी आदमी के शरीर में जनेऊ नाम की चीज होती ही नहीं है। अत: कोई भी आदमी अपने शरीर में से निकाल कर जनेऊ दिखा ही नहीं सकता। जनेऊ पाखंड मात्र है।

गुरु रविदास जी ने सदा कर्मकांडों की निंदा की है। उन्होंने हमेशा जनेऊ और जनेऊ धारकों की निंदा की है। उन्होंने कभी भी जनेऊ, तिलक अथवा ऐसे किसी भी पाखण्ड को नहीं अपनाया।

तीसरा, सतगुरु रविदास जी के विषय में भ्रांति फैलाई जाती है कि गुरु जी ने रामानन्द से शिक्षा ली। यह केवल झूठ के अलावा कुछ भी नहीं है। रामानन्द जी का काल संवत 1236 है और सतगुरु रविदास जी का काल संवत 1433 है। इन दोनों काल में लगभग 200 वर्षों का अंतर है। इसलिए रामानन्द तो सतगुरु रविदास जी के गुरु हो ही नहीं सकते हैं।

सत्य का मार्ग:- सतगुरु रविदास जी ने तथागत बुद्ध और सतगुरु कबीर जी के समान ही सत्य के मार्ग पर चलने का उपदेश दिया। सतगुरु रविदास जी के अनुसार सत्य ही धर्म होता है। धर्म को सत्य मानने वालो के वे कड़े आलोचक थे। उन्होंने धर्म को सत्य ना मानकर सत्य को ही धर्म माना है। उनका उपदेश है :-

रविदास सत्त मत छोड़िए,जौ लौ घट में प्रान।
दूसरो कोई धर्म नाहिं,जग माहि सत्त समान।।
जिन्ह नर सत्त तियागिया, तिन्ह जीवन मरण समान।
रविदास सोई जीवन भला, जहै सभ सत्त परधान।।

श्रम का महत्व:- सतगुरु रविदास जी का संबंध समाज के ऐसे वर्ग से था जो कि मेहनत करके अपना पालन करता था। बिना श्रम के खाने को उन्होंने हेय समझा। उन्होंने श्रम को ईश्वर के बराबर का दर्जा दिया। सतगुरु रविदास जी ने कहा कि जहां तक हो सके व्यक्ति को श्रम करके खाना चाहिए। निष्क्रियता मनुष्य को हर स्तर पर तोड़ देती है। इसलिए सतगुरु रविदास जी व्यक्ति को सदैव नेक-नियत से श्रमशील रहने का संदेश देते हैं:-

रैदास स्रम करि खाइए, जौं लौं पार बसाय।
नेक कमाई जो करहूं, कबहुँ न निसफल जाय।।

इस प्रकार सतगुरु रविदास जी श्रम की प्रतिष्ठा को स्थापित करने पर ज़ोर देते हैं। मनुष्य यदि श्रम करेगा तो उसे अवश्य ही फल प्राप्त होगा।

कर्म का फल पाने का अधिकार:- सतगुरु रविदास जी कहते हैं कि हमें हमेशा अपने काम में लगे रहना चाहिए और कभी भी काम के बदले मिलने वाले फल की आशा नहीं छोड़नी चाहिए क्योंकि कर्म करना हमारा कर्तव्य है तो फल पाना हमारा अधिकार है:-

करम बंधन में रमि रहियो, फल की तज्यो न आस।
करम मानुस का घरम हौ, सत भाखै रविदास।।

बेगमपुरा की संकल्पना :- मध्य युग में सम्पूर्ण भारतीय समाज की स्थिति अत्यंत खराब थी। उस समय की परिस्थितियां अत्यंत दुखद व अत्याचार पूर्ण थी। धर्म, जाति व वर्ग के नाम पर लोगों में आपस में मतभेद था। नारी की स्थिति और भी दयनीय थी। धर्म के नाम पर अनेक प्रकार के पाखंड होते थे। समाज धर्म के नाम पर दिशाहीन था। अधिकांश जनता आर्थिक स्तर पर निर्धन होती जा रही थी। जो संपन्न वर्ग था वह धन के बल पर मनमाना शोषण कर रहा था और ऐशों-आराम की ज़िंदगी जी रहा था।

सतगुरु रविदास जी इसी वातावरण में जन्मे थे। उन्होंने इन सभी परिस्थितियों का सामना करने का साहस करके इसे मिटाने के लिए सदप्रयत्न किया। उन्होंने अपने समय

की सामाजिक व्यवस्था से मुक्ति की तलाश करते हुए दुख विहीन समाज की परिकल्पना की है, जिसका नाम 'बेगमपुरा' है अर्थात उल्लास की नगरी। अपनी वाणी के माध्यम से जिस समतावादी दर्शन को बताया है उसको व्यावहारिक रूप में भी लागू करने का प्रयास किया है। उन्होंने समाज में समता और एकता का संदेश दिया। सारे जगत को बेगमपुरा में बदलने का संदेश दिया है। सतगुरु रविदास जी ने सम्पूर्ण समाज के लिए आदर्श समाज का ढांचा (मॉडल) 'बेगमपुरा' दिया है:-

बेगमपुरा शहर को नाउ दूखु अंदोहु नही तिहि ठाउ।।
नां तसवीस खिराजु न मालु। खउफु न खता न तरसु जवालु।।1।।
अब मोहि खूब वतन गह पाई। उहां खैरि सदा मेरे भाई।।
रहाउ काइमु दाइमु सदा पातसाही। दोम न सोम एक सो आही।।
आबादानु सदा मसहूर। ऊहां गनी बसहि मामूर ।।2।।
तिउ तिउ सैल करहि जिउ भावै। महरम महल न को अटकावै ।।
कहि रविदास खलास चमारा। जो हम सहरी सु मीतू हमारा ।।3।।

भावार्थ :- बेगमपुरा (बे+गम+पुरा) अर्थात बिना गमों का शहर (पुरा)। वहां न कोई दुख है, न कोई चिंता (तसवीस) है, न कोई घबराहट। वहां किसी को कोई पीड़ा नहीं है। वहां कोई जायदाद नहीं है और न ही सामान पर टैक्स (खिराजु) लगता है। वहां खौफ (खउफु), धोखा (खता), लाचारी (तरसु) और अभाव (जवालु) नहीं है। अब मुझे (मोहि) रहने के लिए उस सुंदर और पृथक देश (वतन) की गहरी (गह) पहचान हो गई है। वहां (ऊहां) मनुष्य का सदैव ही भला (खैरि) होता है। वहां सही विचारों की हुकूमत (पातसाही) है, जो अपने मूल्यों पर सदा स्थिर (काइम) व अटल (दाइमु) रहती है। वहां कोई दूसरे (दोम) या तीसरे (सोम) दर्जे का नागरिक नहीं है, सभी एक समान हैं। वहां धर्म, नस्ल, वर्ण, जाति, लिंग, स्थान, भाषा आदि के आधार पर कोई भेदभाव नहीं होता। हमेशा आजीविका श्रम-प्रधान होने के कारण वह स्थान हमेशा आबाद (आबादानु) व प्रसिद्ध (मसहूर) रहता है। यह श्रमण परंपरा हमें सिंधु घाटी से जोड़ती है और सतगुरु रविदास जी उसी समानता आधारित राज-व्यवस्था को प्राप्त करने का आह्वान करते हैं। वहां रहने वाले व्यक्ति कानून (गनी) के अनुसार आचरण करते हैं। वहां (तिउ) पर व्यक्ति को जहां चाहे वहां जाने की स्वतंत्रता है। न ही राजा के कर्मचारी और न ही महल की ऐसी व्यवस्था है कि किसी की आजादी का हनन किया जाए। बेखौफ (खलास) सतगुरु रविदास जी कहते हैं कि जो उस नगर (बेगमपुरा) के विचारों के समर्थक है वही मेरे साथी हैं, मेरे मित्र हैं।

'बेगमपुरा शहर' में न तो भगवान की कल्पना है, न ही धार्मिक कट्टरता के लिए कोई स्थान है और न ही यहां वर्ण-व्यवस्था, मूर्तिपूजा, चमत्कार, आडम्बर और कर्मकांड के प्रपंच हैं। बेगमपुरा सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक-सांस्कृतिक मॉडल है। यह एक संपूर्ण मॉडल है जो पूर्ण रूप से वैज्ञानिक, तार्किक, मानव हितैषी, समतामूलक विचारधारा पर स्थापित शहर है। सिंधु घाटी सभ्यता या हड़प्पा सभ्यता के रूप में बेगमपुरा को देखा जा सकता है। सतगुरु रविदास उसी राज की स्थापना के लिए आह्वान करते हैं। अगर बेगमपुरा के विचारों को भारतीय संविधान के मूलभूत अधिकारों से मिलाकर देखा जाए तो ऐसा लगेगा कि जैसे सतगुरु रविदास के विचारों को ही संविधान में हू-ब-हू उतार दिया गया हो।

जिन नैतिक मूल्यों और संदेशों की बात सतगुरु रविदास जी ने की है उन्हीं नैतिक मूल्य और संदेशों को बाबा साहब 20वीं शताब्दी मैं दोहराते प्रतीत होते हैं। बाबा साहेब ने 21 जुलाई 1942 को संदेश दिया था- शिक्षित बनो, संगठित रहो और संघर्ष करो। दरअसल वह संदेश मूल रूप से सतगुरु रविदास जी से ही लिया था।

1. शिक्षित बनो:-

सत विद्या को पढ़े, प्राप्त करें सदा ज्ञान।
रविदास कहे बिन विद्या, नर को जान अजान।।
अविद्या अहित कीन, ताते विवेक दीप मलीन।

अर्थात अच्छी शिक्षा प्राप्त करने के बाद ही व्यक्ति ज्ञानवान बन पाता है। अपना बौद्धिक विकास कर पाता है और उन्नति करता है। ज्ञान से ही सम्मान मिलता है।

2. संगठित रहो:-

सतसंगत मिली राहिये माधो, जैसे मधुप मखीरा।

अर्थात हमें आपस में मधू मक्खियों की तरह मिलकर रहना चाहिए। यह हमें एकजुटता और संघर्ष का संदेश देता है और इससे हमारी बड़ी से बड़ी समस्या हल हो सकती है।

3. संघर्ष करो:-

पराधीनता पाप है, जान लेहु रे मीत। रैदास दास पराधीन सो, कौन करे है प्रीत।।

अर्थात गुलाम बनकर रहना पाप है, इसलिए सघंर्ष करो और अपनी गुलामी से सदा के लिए मुक्त हो जाओ, निर्भय होकर प्रगति करो और जीवन में समर्थ बन जाओ क्योंकि गुलाम व्यक्ति से ना कोई प्रेम करता है ना ही कोई सम्मान देता है। सतगुरु रविदास जी का आह्वान है कि इनके नाम के नारे जो बोलेगा वह भय रहित हो जाएगा 'जो बोले सो निर्भय, सतगुरु रविदास जी की जय।

तथागत बुद्ध द्वारा स्थापित धम्म, सतगुरु रविदास जी के बेगमपुरा की संकल्पना, सद्गुरु कबीर के विचार और बाबा साहब डॉ. भीम राव अंबेडकर द्वारा बनाए गए भारतीय संविधान और उसमे अंतर्निहित स्वतन्त्रता, समानता और भाईचारे की भावना में पूरी समानता दिखाई देती है। तथागत बुद्ध का नैतिक आचरण,मैत्री,करुणा,प्रज्ञा, सतगुरु रविदास और सद्गुरु कबीर की अंधविश्वास, पाखंड, कर्मकांड, मूर्तिपूजा, चमत्कार और जाति-प्रथा विरोध की शैली डॉ. भीम राव अंबेडकर की 22 प्रतिज्ञाओं में दिखाई देती हैं। इन सभी के बताए हुए मार्ग पर चलकर ही हम मानव का कल्याण और सशक्त समाज का निर्माण कर सकते हैं।

नमो बुद्धाय
भवतु सब्ब मंगलम

अत्त दीपो भव

SOCIAL ACTION GROUPS FOR AMBEDKARITE REFORM (SAGAR)
Office : 106, Sector-21B, Faridabad, Haryana

Printed By : Mansi Digital Graphic, Ballabgarh, Faridabad, Haryana

सतगुरु रविदास जी : जीवन और संदेश

जन्म	:	माघ पूर्णिमा, विक्रम संवत 1433, (सन 1376 ई.)
स्थान	:	सीर गोवर्धनपुर (वाराणसी, उत्तर प्रदेश)
माता	:	करमा देवी
पिता	:	राघव
पत्नी	:	लोना देवी
पुत्र	:	विजयदास
महापरिनिर्वाण	:	विक्रम संवत 1584 (सन 1527 ई.) चित्तौड़गढ़ राजस्थान